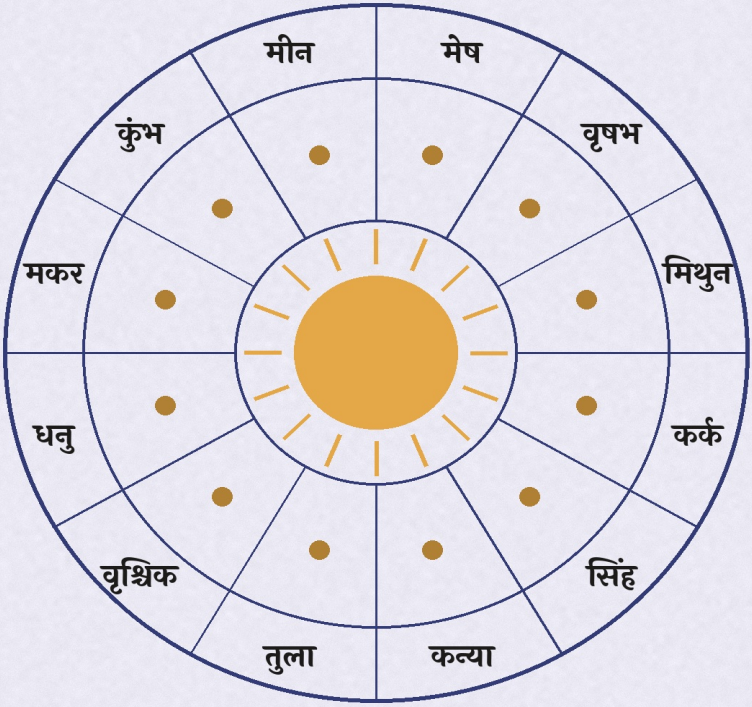
A SIMPLE GUIDE TO VEDIC ASTROLOGY

KUNDLI · GRAHA · RASHI

ज्योतिष से भविष्य

JYOTISH SE BHAVISHYA

कुंडली, ग्रह और राशियों को
समझने की सरल गाइड



20 CHAPTERS · 12 DIAGRAMS · CHEAT SHEET

LEARN | READ | REFLECT | ACT

ANOOP GUPTA

ज्योतिष से भविष्य

Jyotish Se Bhavishya

कुंडली, ग्रह और राशियों को समझने की सरल गाइड

Anoop Gupta

ज्योतिष से भविष्य (Jyotish Se Bhavishya)

लेखक: अनूप गुप्ता (Anoop Gupta)

Copyright © 2026 Anoop Gupta. सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस पुस्तक का कोई भी हिस्सा लेखक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित, संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता, सिवाय समीक्षा के लिए छोटे उद्धरणों के।

स्वतंत्र रूप से प्रकाशित। प्रथम संस्करण, 2026।

यह पुस्तक भारतीय ज्योतिष की परंपरा का शैक्षिक परिचय है। ज्योतिष एक मान्यता-प्रणाली है, विज्ञान नहीं; यह चिकित्सा, कानूनी या वित्तीय सलाह नहीं है और किसी परिणाम की गारंटी नहीं देती। सभी उदाहरण, नाम और जन्म-विवरण काल्पनिक हैं।

चित्र और आरेख लेखक द्वारा तैयार किए गए हैं।

यह पुस्तक उन सभी जिज्ञासु पाठकों को समर्पित है, जो भारतीय ज्ञान-परंपराओं को समझना चाहते हैं और जीवन में ज्ञान, विवेक तथा कर्म को महत्व देते हैं।

विषय-सूची

महत्वपूर्ण अस्वीकरण 6
शुरुआत यहाँ से करें (Start Here) 7
अध्याय 1: ज्योतिष क्या है: इतिहास, वेदांग और सही दृष्टिकोण 10
अध्याय 2: 12 राशियाँ: स्वभाव, तत्व और स्वामी 26
अध्याय 3: 9 ग्रह: स्वभाव, कारकत्व और बल 50
अध्याय 4: 12 भाव: जीवन के 12 क्षेत्र 78
अध्याय 5: 27 नक्षत्र: सरल परिचय 106
अध्याय 6: कुंडली कैसे बनती है: लग्न, जन्म समय और स्थान 123
अध्याय 7: कुंडली पढ़ने का Step-by-Step तरीका 139
अध्याय 8: ग्रहों की दृष्टि और युति 161
अध्याय 9: योग: राजयोग, धनयोग, गजकेसरी और पंचमहापुरुष योग 180
अध्याय 10: दोष: मांगलिक, कालसर्प, साढ़ेसाती — सच और भ्रम 203
अध्याय 11: दशा पद्धति: विंशोत्तरी दशा से समय का अनुमान 217
अध्याय 12: गोचर: ग्रहों का वर्तमान प्रभाव 233
अध्याय 13: करियर और शिक्षा का विश्लेषण 246
अध्याय 14: धन और व्यापार का विश्लेषण 263
अध्याय 15: विवाह और कुंडली मिलान (गुण मिलान) 278
अध्याय 16: स्वास्थ्य के संकेत: केवल पारंपरिक ज्योतिषीय दृष्टि से 297
अध्याय 17: मुहूर्त: शुभ समय का चयन 310
अध्याय 18: पंचांग पढ़ना सीखें 329
अध्याय 19: सरल और निःशुल्क उपाय 343
अध्याय 20: ज्योतिष के साथ कर्म: भाग्य बनाम पुरुषार्थ 357
परिशिष्ट 1: तीन नमूना कुंडलियों का विस्तृत विश्लेषण 370
परिशिष्ट 2: ज्योतिष Quick Reference Tables 381
परिशिष्ट 3: एक पन्ने की चीट शीट 391

परिशिष्ट 4: ज्योतिष शब्दकोश (Astrology Glossary) 394
परिशिष्ट 5: संदर्भ ग्रंथ और स्रोत (Sources) 406
अंतिम संदेश 411

महत्वपूर्ण अस्वीकरण

ज्योतिष एक पारंपरिक मान्यता-प्रणाली (belief system) है, विज्ञान नहीं। नियंत्रित वैज्ञानिक परीक्षणों में ज्योतिषीय भविष्यवाणियों की सटीकता सिद्ध नहीं हुई है (देखें परिशिष्ट 5)। इस पुस्तक को भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के अध्ययन के रूप में पढ़ें।

यह पुस्तक भारतीय वैदिक ज्योतिष की पारंपरिक मान्यताओं, सिद्धांतों और अध्ययन-पद्धतियों को सरल भाषा में समझाने के शैक्षिक उद्देश्य से लिखी गई है।

ज्योतिष एक पारंपरिक ज्ञान-परंपरा है। इसके माध्यम से की जाने वाली व्याख्याओं को निश्चित भविष्यवाणी या वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित परिणाम नहीं माना जाना चाहिए। अलग-अलग ज्योतिषीय परंपराओं और विद्वानों की व्याख्याओं में अंतर हो सकता है।

इस पुस्तक में दी गई जानकारी:

- किसी भी प्रकार की चिकित्सा सलाह या बीमारी का निदान नहीं है।
- निवेश, व्यापार, ऋण या वित्तीय निर्णय लेने की सलाह नहीं है।
- विवाह, कानूनी मामलों या व्यक्तिगत संबंधों में विशेषज्ञ सलाह का विकल्प नहीं है।
- किसी विशेष घटना, सफलता, धन, विवाह या स्वास्थ्य परिणाम की गारंटी नहीं देती।

पाठकों को महत्वपूर्ण निर्णय अपनी वास्तविक परिस्थितियों, उचित जानकारी और संबंधित विशेषज्ञों की सलाह के आधार पर लेने चाहिए।

इस पुस्तक का उद्देश्य डर पैदा करना, अंधविश्वास बढ़ाना या महंगे ज्योतिषीय उपाय बेचने के लिए प्रेरित करना नहीं है। इसका उद्देश्य पाठकों को पारंपरिक ज्योतिष की बुनियादी समझ देना और विवेकपूर्ण दृष्टिकोण विकसित करना है।

इस पुस्तक में दिए गए सभी उदाहरण, नाम और जन्म-विवरण **काल्पनिक** हैं। स्वास्थ्य संबंधी किसी भी समस्या के लिए योग्य डॉक्टर से, और धन, कानून या करियर के निर्णयों के लिए संबंधित योग्य विशेषज्ञ से सलाह लें।

शुरुआत यहाँ से करें (Start Here)

ज्योतिष को समझने की पहली सीढ़ी

भारत में ज्योतिष का नाम सुनते ही बहुत से लोगों के मन में जन्मकुंडली, ग्रह, राशियाँ, नक्षत्र, विवाह, करियर और भविष्य से जुड़े प्रश्न आने लगते हैं।

किसी के मन में प्रश्न होता है कि उसकी राशि क्या है। कोई जानना चाहता है कि कुंडली में कौन-सा ग्रह मजबूत है। कोई विवाह के लिए गुण मिलान समझना चाहता है, तो कोई दशा और गोचर के बारे में जानना चाहता है।

लेकिन ज्योतिष को सही तरीके से समझने के लिए सबसे पहले एक बुनियादी बात जानना जरूरी है:

ज्योतिष केवल राशियों का नाम याद करने या भविष्य बताने की विधि नहीं है। यह एक पारंपरिक भारतीय ज्ञान-परंपरा है, जिसमें समय, खगोलीय गणना और जीवन की घटनाओं की प्रतीकात्मक व्याख्या से संबंधित अलग-अलग विषय विकसित हुए हैं।

इस पुस्तक में हम वैदिक ज्योतिष को बिल्कुल शुरुआत से समझेंगे।

आप धीरे-धीरे जानेंगे कि:

- ज्योतिष का इतिहास क्या है।
- वेदांग ज्योतिष का क्या महत्व है।
- 12 राशियाँ और 9 ग्रह क्या दर्शाते हैं।
- 12 भावों का क्या अर्थ है।
- नक्षत्र और लग्न कैसे समझे जाते हैं।
- जन्मकुंडली कैसे पढ़ी जाती है।
- दशा और गोचर का पारंपरिक अर्थ क्या है।
- योग और दोष की व्याख्या कैसे की जाती है।
- विवाह, करियर, धन और मुहूर्त के विषय में पारंपरिक ज्योतिष क्या कहता है।
- सरल और निःशुल्क आध्यात्मिक उपायों का क्या स्थान है।

यह पुस्तक किन लोगों के लिए है?

शुरुआती विद्यार्थियों के लिए: जिन्हें ज्योतिष के बारे में बहुत कम जानकारी है और वे इसकी मूल बातें सीखना चाहते हैं।

जन्मकुंडली समझने वालों के लिए: जो लग्न, ग्रह, राशि और भाव के संबंध को समझना चाहते हैं।

सामान्य पाठकों के लिए: जो भारतीय परंपरा और ज्योतिष शास्त्र को सरल भाषा में जानना चाहते हैं।

ज्योतिष का अध्ययन करने वालों के लिए: जो पारंपरिक ग्रंथों के आधार पर व्यवस्थित तरीके से सीखना चाहते हैं।

इस पुस्तक को कैसे पढ़ें?

इस पुस्तक को क्रम से पढ़ना बेहतर रहेगा।

पहले राशियों, ग्रहों और भावों को समझें। उसके बाद नक्षत्र, लग्न और कुंडली निर्माण की प्रक्रिया पढ़ें।

जब मूल बातें स्पष्ट हो जाएँ, तभी योग, दशा, गोचर और कुंडली विश्लेषण की ओर बढ़ें।

हर अध्याय में आपको उदाहरण, तालिकाएँ, सामान्य गलतियाँ, मुख्य बातें और अभ्यास मिलेंगे।

इस पुस्तक के विशेष बॉक्स

प्रो टिप

हर अध्याय में एक व्यावहारिक सुझाव, जिससे सीखना आसान हो।

आम गलती

वह भ्रम जिसमें शुरुआती पाठक अक्सर पड़ जाते हैं।

मुख्य बातें

अध्याय का सार, दोहराने के लिए।

आज ही करें

5–10 मिनट का छोटा अभ्यास।

शास्त्रीय संदर्भ

किस ग्रंथ में यह नियम मिलता है, ताकि आप स्वयं जाँच सकें।

तीन पढ़ने के रास्ते

- **बिल्कुल नए पाठक:** अध्याय 1 से 7 क्रम से पढ़ें, फिर परिशिष्ट 3 (चीट शीट) अपने पास रखें।
- **कुंडली पढ़ना सीखना है:** अध्याय 2–4, 7–8, 11 और परिशिष्ट 1 की नमूना कुंडलियाँ।
- **पंचांग, मुहूर्त और विवाह-मिलान:** अध्याय 5, 15, 17 और 18।

एक जरूरी बात: ज्योतिष और जीवन के निर्णय

इस पुस्तक में ज्योतिष को एक पारंपरिक शास्त्र और सांस्कृतिक अध्ययन के विषय के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

ज्योतिषीय व्याख्याएँ पारंपरिक मान्यताओं और ग्रंथों पर आधारित होती हैं। उन्हें वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित भविष्यवाणी या निश्चित परिणाम नहीं समझना चाहिए।

- स्वास्थ्य की समस्या हो तो डॉक्टर से सलाह लें।
- निवेश या कर्ज का निर्णय वित्तीय जानकारी के आधार पर करें।
- कानूनी मामले में योग्य वकील की सलाह लें।
- विवाह और रिश्तों के फैसले केवल कुंडली के आधार पर न करें।
- किसी ग्रह या दोष के नाम पर डरकर महंगे रत्न, पूजा या उपाय खरीदने की जरूरत नहीं है।

ज्योतिष का अध्ययन आपको परंपरा और उसके विचारों को समझने में सहायता कर सकता है, लेकिन आपके कर्म, विवेक और वास्तविक परिस्थितियों का स्थान कोई कुंडली नहीं ले सकती।

अध्याय 1

ज्योतिष क्या है: इतिहास, वेदांग और सही दृष्टिकोण

ज्योतिष की मूल अवधारणा, उसके ऐतिहासिक विकास और उसे समझने का संतुलित तरीका जानिए।

इस अध्याय में आप क्या सीखेंगे?

- ज्योतिष शब्द का अर्थ और उसका पारंपरिक महत्व।
- वेदांग ज्योतिष क्या है और छह वेदांगों में इसका स्थान क्या है।
- प्राचीन भारतीय समय-गणना और खगोलीय अध्ययन का महत्व।
- पारंपरिक ज्योतिष ग्रंथों का विकास कैसे हुआ।
- ज्योतिष और आधुनिक विज्ञान के बीच क्या अंतर है।
- ज्योतिष का अध्ययन करते समय किन गलतियों से बचना चाहिए।

शुरुआत एक उदाहरण से

दिल्ली में रहने वाला 25 वर्षीय राहुल अपने परिवार के साथ एक पारिवारिक कार्यक्रम में गया।

वहाँ किसी ने उससे पूछा, "तुम्हारी राशि क्या है?"

राहुल ने जवाब दिया, "मुझे तो बस इतना पता है कि मेरी राशि तुला है।"

इसके बाद बातचीत शुरू हुई।

किसी ने बताया कि जन्मराशि चंद्रमा से देखी जाती है। किसी ने कहा कि लग्न अधिक महत्वपूर्ण होता है। एक व्यक्ति ने बताया कि केवल सूर्य राशि देखकर पूरी कुंडली नहीं समझी जा सकती।

राहुल के मन में कई सवाल पैदा हो गए।

- राशि और लग्न में क्या अंतर है?
- कुंडली में नौ ग्रह क्यों माने जाते हैं?
- ज्योतिष का संबंध वेदों से कैसे है?
- क्या ज्योतिष में कही गई हर बात निश्चित होती है?

उसने तय किया कि वह ज्योतिष को केवल सुनी-सुनाई बातों से नहीं, बल्कि उसके मूल सिद्धांतों और पारंपरिक ग्रंथों से समझेगा।

यही इस पुस्तक की शुरुआत है: पहले ज्ञान को समझना, फिर उसकी व्याख्या करना।

1.1 ज्योतिष शब्द का अर्थ क्या है?

'ज्योतिष' शब्द संस्कृत के 'ज्योतिस्' या 'ज्योति' से संबंधित है, जिसका सामान्य अर्थ प्रकाश, चमक या प्रकाशमान खगोलीय पिंडों से जुड़ा है।

भारतीय परंपरा में ज्योतिष का संबंध सूर्य, चंद्रमा, ग्रहों, नक्षत्रों, समय और उनकी गणनाओं से रहा है।

समय के साथ ज्योतिष की कई शाखाएँ और अध्ययन-पद्धतियाँ विकसित हुई।

सामान्य रूप से पारंपरिक ज्योतिष के अंतर्गत इन विषयों का अध्ययन किया जाता है:

1. खगोलीय पिंडों की स्थिति।
2. तिथि, वार, नक्षत्र और योग जैसी समय-संबंधी गणनाएँ।
3. ग्रहों और राशियों का पारंपरिक वर्गीकरण।
4. जन्मकुंडली का निर्माण।
5. ग्रहों, भावों और योगों की पारंपरिक व्याख्या।
6. दशा और गोचर का अध्ययन।
7. मुहूर्त और पंचांग।

इनमें से कुछ विषय मुख्यतः गणना और खगोलीय स्थिति से संबंधित हैं, जबकि कुछ विषय पारंपरिक फलित व्याख्या से संबंधित हैं।

इन दोनों को एक ही प्रकार का ज्ञान समझना उचित नहीं है।

1.2 ज्योतिष के दो महत्वपूर्ण पक्ष

ज्योतिष को समझते समय उसके दो प्रमुख पक्षों में अंतर करना उपयोगी है।

पहला पक्ष: गणित और खगोलीय गणना

इसमें आकाशीय पिंडों की स्थिति और समय की गणना शामिल होती है।

उदाहरण:

- सूर्य की स्थिति।
- चंद्रमा की स्थिति।
- ग्रहों की गणना।
- नक्षत्रों की स्थिति।
- तिथि और पंचांग।
- ग्रहों के गोचर की गणना।

इसके लिए गणितीय विधियों और खगोलीय मॉडलों की आवश्यकता होती है।

दूसरा पक्ष: फलित ज्योतिष

फलित ज्योतिष में ग्रहों, राशियों, भावों और नक्षत्रों की स्थिति का पारंपरिक अर्थ निकाला जाता है।

उदाहरण के लिए, पारंपरिक ज्योतिष में:

- सूर्य को आत्मबल, प्रतिष्ठा और पिता से जोड़ा जाता है।
- चंद्रमा को मन और भावनाओं से जोड़ा जाता है।
- बुध को बुद्धि और संवाद से जोड़ा जाता है।
- गुरु को ज्ञान और विस्तार से जोड़ा जाता है।
- शनि को कर्म, अनुशासन और विलंब से जोड़ा जाता है।

ये पारंपरिक ज्योतिषीय कारकत्व हैं। इन्हें आधुनिक मनोविज्ञान या विज्ञान द्वारा प्रमाणित कारण-परिणाम संबंध नहीं समझना चाहिए।

दोनों पक्षों का अंतर

गणितीय ज्योतिष	फलित ज्योतिष
ग्रहों की स्थिति की गणना	ग्रहों की पारंपरिक व्याख्या
तिथि और समय का निर्धारण	जीवन के क्षेत्रों का विश्लेषण
खगोलीय मॉडल	प्रतीकात्मक नियम
गणना की शुद्धता जाँची जा सकती है	भविष्यवाणी की विश्वसनीयता अलग प्रश्न है

1.3 वेदांग ज्योतिष क्या है?

भारतीय वैदिक परंपरा में वेदों के अध्ययन को व्यवस्थित बनाने के लिए छह सहायक विषयों का उल्लेख मिलता है। इन्हें **षड्वेदांग** कहा जाता है।

'षड्' का अर्थ छह और 'वेदांग' का अर्थ वेदों के अंग या सहायक विषय है।

ये छह वेदांग हैं:

क्रम	वेदांग	मुख्य विषय
1	शिक्षा	उच्चारण और ध्वनि
2	कल्प	वैदिक अनुष्ठानों के नियम
3	व्याकरण	भाषा की संरचना
4	निरुक्त	शब्दों की व्युत्पत्ति और अर्थ
5	छंद	वैदिक छंद और मात्राएँ
6	ज्योतिष	समय और खगोलीय गणना

वेदांग ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य वैदिक अनुष्ठानों के लिए उपयुक्त समय का निर्धारण करना था।

उस समय तिथि, ऋतु, मास और नक्षत्रों की गणना का विशेष महत्व था।

सरल शब्दों में, जब लोगों को यह समझना होता था कि कोई विशेष समय, महीना या ऋतु कब आएगी, तब खगोलीय अवलोकन और गणना उपयोगी होते थे।

भारत सरकार के वैदिक हेरिटेज पोर्टल पर भी वेदांग ज्योतिष का उद्देश्य वैदिक अनुष्ठानों के लिए दिन और समय निर्धारित करने के संदर्भ में समझाया गया है।

वेदांग ज्योतिष के प्रमुख विषय

- सूर्य और चंद्रमा की गति।
- चंद्र मास और सौर मास।
- ऋतुओं का निर्धारण।
- समय की गणना।
- नक्षत्रों का उपयोग।
- पंचांग संबंधी आधारभूत विचार।

महर्षि लगध का उल्लेख

वेदांग ज्योतिष का संबंध परंपरागत रूप से महर्षि लगध से जोड़ा जाता है।

हालाँकि इसके रचनाकाल और ऐतिहासिक विवरण को लेकर विद्वानों के बीच अलग-अलग मत हैं।

इसलिए किसी एक निश्चित वर्ष को निर्विवाद ऐतिहासिक तथ्य के रूप में प्रस्तुत करना उचित नहीं होगा।

कुछ विद्वान इसकी खगोलीय स्थितियों के आधार पर बहुत प्राचीन तिथि प्रस्तावित करते हैं, जबकि अन्य विद्वान उपलब्ध पाठ और उसके ऐतिहासिक संदर्भ के आधार पर बाद की तिथि मानते हैं।

> **ध्यान दें:** वेदांग ज्योतिष को आज की विस्तृत जन्मकुंडली-पद्धति के समान नहीं समझना चाहिए। इसका प्रमुख प्रारंभिक स्वरूप समय और खगोलीय गणना से जुड़ा था।

प्रो टिप

ज्योतिष के हर कथन को "संभावना" की भाषा में पढ़ें, "निश्चितता" की भाषा में नहीं। इससे आप डर और भ्रम दोनों से बचेंगे।

1.4 प्राचीन भारत में समय और खगोल का महत्व

प्राचीन समाज में समय की गणना केवल घड़ी देखने के लिए नहीं की जाती थी।

कृषि, ऋतुओं, धार्मिक अनुष्ठानों और सामाजिक गतिविधियों के लिए समय का ज्ञान आवश्यक था।

उदाहरण के लिए:

- वर्षा ऋतु के आने का अनुमान।
- फसल बोने और काटने का समय।
- चंद्र मास का निर्धारण।
- सूर्य की वार्षिक गति का अध्ययन।
- धार्मिक पर्वों के लिए तिथि निर्धारित करना।

इस प्रकार आकाश का अवलोकन व्यावहारिक जीवन का हिस्सा था।

पंचांग का विकास

भारतीय समय-गणना परंपरा में पंचांग एक महत्वपूर्ण साधन बना।

पंचांग के पाँच मुख्य अंग होते हैं:

1. तिथि।
2. वार।
3. नक्षत्र।
4. योग।
5. करण।

इनका विस्तृत अध्ययन हम अध्याय 18 में करेंगे।

पंचांग केवल धार्मिक कैलेंडर नहीं, बल्कि भारतीय पारंपरिक समय-गणना की एक व्यवस्थित पद्धति भी है।

1.5 भारतीय ज्योतिष का ऐतिहासिक विकास

आज जिस ज्योतिष को हम जन्मकुंडली, लग्न, राशि, ग्रह, योग और दशा के माध्यम से समझते हैं, उसका विकास एक लंबे ऐतिहासिक क्रम में हुआ।

इसे एक ही समय में तैयार हुई प्रणाली समझना सही नहीं होगा।

चरण 1: वैदिक काल और वेदांग ज्योतिष

प्रारंभिक परंपरा में सूर्य, चंद्रमा, ऋतुओं, मास और नक्षत्रों के आधार पर समय-गणना का महत्व था।

वेदांग ज्योतिष इस परंपरा का प्रमुख उपलब्ध ग्रंथ है।

चरण 2: गणितीय खगोलशास्त्र का विकास

समय के साथ भारतीय विद्वानों ने ग्रहों की स्थिति, गणना, ग्रहण और कैलेंडर संबंधी विषयों पर अधिक व्यवस्थित कार्य किया।

इस परंपरा में आर्यभट, वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त जैसे विद्वानों का महत्वपूर्ण स्थान है।

आर्यभट की आर्यभटीय और वराहमिहिर की पञ्चसिद्धान्तिका भारतीय गणितीय खगोलशास्त्र के अध्ययन में महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

Anoop Gupta Books

End of free sample – buy the full book at onlineebook.in/books/jyotish-se-bhavishya.html

This file is a free sample. The complete ebook is sold at onlineebook.in.